कटकरंज (सागरगोटा)

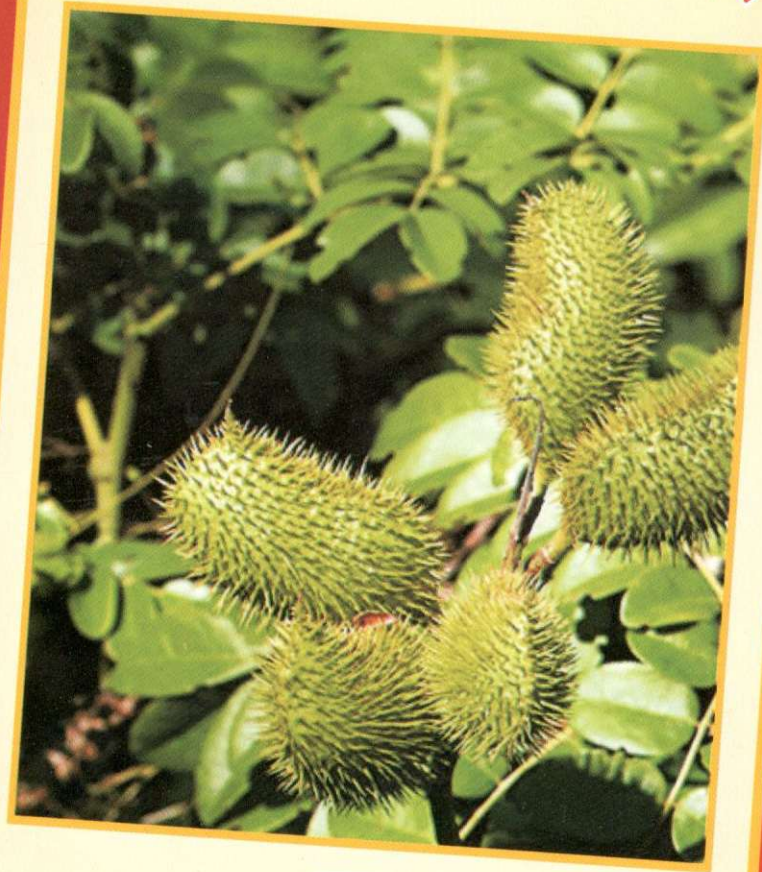

RSMPB JAIPUR

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com
Website : www.rsmpb.com

कटकरंज (सागरमोटा)

1.वानस्पतिक नाम: Caesalpinia bonduc

कुल: Fabaceae

2.सामान्य वर्णन: इसे संस्कृत में पूर्तिकरञ्ज कहते है। यह बहुवर्षीय पौधा है। काँटों से युक्त होता है, जिसकी शाखायें लम्बी होती हैं इसकी शाखा, पुष्पदण्ड एवं पत्रदण्ड पर सूक्ष्म एवं कठोर काँटे होते हैं। पत्रदण्ड के काँटे प्रायः टेडे होते है। छोटी शाखायें रोमयुक्त पाई जाती है। पत्तियाँ 6 से 10 जोड़ों में अण्डाकार होती है। पुष्प हल्के पीले रंग के होते हैं जो 15 से.मी. से 30 से.मी. लम्बी शाखा के अग्रभाग पर मंजारियों में लगते है। फली चौड़ी आयताकार 7.5 से.मी. से 4 से.मी. तक होती है। प्रत्येक फली में 1–2 बीज होते है जो गोल तथा अण्डकार व कठोर आवरण वाले होते हैं। पुष्प वर्षा ऋतु से शुरू होकर फलियाँ सर्दियों में लगती एवं पकती है।

3.भौगोलिक वितरण: यह समस्त भारत के उष्ण प्रदेशों एवं हिमालय की निचली घाटियों में 3000 फीट की ऊँचाई तक प्रायः सर्वत्र प्राप्त होता है

4. कृषि तकनीक: यह एक बहु वषीय पौधा है।

इसे खेत के चारों तरफ बाढ़ के रूप में 4–5 लाइनों में लगाने से खेत की आवारा पशुओं से रक्षा होती है। साथ ही उत्पादन भी प्राप्त होता है।यह सभी प्रकार की मृदाओं में हो सकता है। दोमट, लाल–काली, भुरभुरी व अच्छे जल निकास वाली भूमि में अच्छा होता है। जल भराव वाले क्षेत्र में इसे नहीं लगाना चाहिए। इसकी खेती में किसी प्रकार की खाद की आवश्यकता नहीं होती है। यह स्वयम् भूमि की उत्पादकता बढ़ाता हैं वह भूमि को वायुमण्डल से नाइट्रोजन प्रदान करता है।इसके बीज को जून–जुलाई में एक बरसात हो जाने के पूर्व अथवा बाद में कभी भी लगाया जा सकता है।खेत के चारों ओर 1 मीटर की दूरी पर 4 से 5 लाइनों में हल्की गहरी नालियाँ बना ली जाती है। मानसून आने के 3–4 दिन पूर्व अथवा प्रथम बरसात हो जाने के उपरान्त 50 से.मी. की दूरी पर 1 अथवा 2 बीज चोब देते हैं। कुछ दिनों में इनका अंकुरण हो जाता है।वर्षा ऋतु में इसे अतिरिक्त पानी की आवश्यकता नहीं रहती।सर्दियों में एक माह में एवं गर्मियों में 15 दिन में पानी देना चाहिए।प्रारम्भिक अवस्था में पहले वर्ष आवश्यकता होने पर 1–2 निराइ–गुडाई कर दें। इसके बाद निराइ–गुडाई की आवश्यकता

नहीं है। इसमें अभी तक किसी प्रकार की बीमारी नहीं देखी गई है।

5. फसलोत्पादन तकनीक (Harvesting Technique) यह बहुवर्षीय फसल है एवं इसका उत्पाादन इसके फल है। अतः फलों को तोड़ा जाता है जो तीसरे वर्ष से प्राप्त होते है। तीसरे वर्ष से एक पौधे से 5 से 10 किलोग्राम बीजों की प्राप्तियाँ होने लग जाती है जो अगले 20–30 वर्ष तक निरन्तर प्राप्त होती रहती है।

6. औषधीय उपयोगः मुख्य उपयोग : यह कफ बात शामक, शोथहर, ज्वरध्न गर्भाशयोत्तेजक, वेदना स्थापन, अनुलोमन, यकृत् प्लीहोदर नाशक, श्वासहर, कुष्ठध्न विषम ज्वर निवारण हेतु कुनैन का प्रतिनिधि द्रव्य समझा जाता है। बीजों में वाडुसिन नाम

एक तिक्त अक्रिस्टलीय ग्लुकोसाइड पाया जाता है। यह सफेद चूर्ण के रूप में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सुक्रोज एवं फाइटाँस्टेरोल आदि तत्त्व पाए जाते है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर

फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975

Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर

फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975

Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com